जानते हैं, उन्हें केवल सत्त्वगुण का विकास करते हुए सत्संग द्वारा इन सभी गुणों से छूट कर कृष्णभावनाभावित हो जाना चाहिये। मनुष्यजीवन का यही लक्ष्य है। अन्यथा इसकी कोई गारण्टी नहीं है कि फिर इस मनुष्ययोनि की ही प्राप्ति हो।

कर्मणः सुकृतस्याहुः सात्त्विकं निर्मलं फलम्।
रजसस्तु फलं दुःखमज्ञानं तमसः फलम्।।१६।।

कर्मणः=कर्म का; **सुकृतस्य**=सात्त्विक; **आहुः**=कहा है; **सात्त्विकम्**=सात्त्विक; **निर्मलम्**=शुद्ध; **फलम्**=परिणाम; **रजसः**=रजोगुणी कर्म का; **तु**=तो; **फलम्**=फल; **दुःखम्**=दुःख है; **अज्ञानम्**=अनर्थ; **तमसः**=तमोगुण का; **फलम्**=परिणाम होता है।

अनुवाद

सात्त्विक कर्म से अन्तःकरण की शुद्धि होती है; राजस कर्म का फल दुःख है और तामस कर्म से अज्ञान की प्राप्ति होती है।।१६।।

तात्पर्य

सात्त्विक पुण्यकर्म शुद्ध करते हैं। इसलिए सब प्रकार के मोह से मुक्त महर्षिजन सदा आनन्दमय रहते हैं। राजस कर्मों से परिणाम में दुःख ही दुःख होता है। विषयसुख के लिए जो भी कर्म किया जायगा, उसका विफल होना निश्चित है। उदाहरण के लिए, यदि किसी को महल की कामना हो, तो उसके निर्माण में अथक कष्ट उठाना पड़ेगा। वित्तीय अधिकारी को धनोपार्जन का कष्ट सहना पड़ता है और श्रमिक भी कठोर परिश्रम करते हैं। इस प्रकार सभी को दुःख मिलता है। इसीलिए भगवद्गीता का उपदेश है कि सब प्रकार की रजोगुणी क्रियाओं में निश्चित रूप से बड़ा दुःख होता है। यह सब करने से इस तुच्छ मानसिक सुख की अनुभूति तो हो सकती है कि "यह घर अथवा धन मेरा है," परन्तु यह सच्चा सुख नहीं है। जो तमोगुणी कर्म करता है, उसमें ज्ञान का बिल्कुल अभाव रहता है। अतः उसके सब कर्म वर्तमान में तो दुःखदायक हैं ही; इसके अतिरिक्त, अगले जन्म में वह मूढ़ पशुयोनि में गिरता है। यद्यपि माया-मुग्ध पशु यह नहीं समझ पाते, परन्तु वास्तव में पशु-जीवन सर्वथा दुःखमय है। पशुवध करना भी तमोगुण का कार्य है। वधिक नहीं जानता कि वह जिस पशु को मार रहा है, जन्मान्तर में वही उसके वध के योग्य देह को प्राप्त करेगा। यह प्रकृति का नियम है। मानवसमाज में भी ऐसा प्रचलन है—हत्यारे को प्राणदण्ड दिया जाता है। अज्ञानवश लोग यह नहीं समझ पाते कि इस सम्पूर्ण सृष्टिरूप राज्य पर परमेश्वर का शासन है। जीवमात्र उनका पुत्र है; अतः किसी कीट का भी मारा जाना उनके लिए असह्य है। इसलिए वधिक को दण्ड की प्राप्ति अवश्य होगी। यह न जानकर रसना के स्वाद के लिए पशुवध करना गाढ़ अज्ञान का चिह्न है। वास्तव में पशुवध करना मनुष्य के लिए सब प्रकार से अनावश्यक है, क्योंकि श्रीभगवान् ने खाने के लिए अनेक सात्त्विक पदार्थ रचे हैं। इस पर भी, जो माँस का आहार करता है, उस तमोगुणी का भविष्य अति अन्धकारमय हो जाता है।